उपसंहार

सर्वमित्रा सुरजन

आकाशवाणी की खट्टी-मीठी यादें

आकाशवाणी से मेरा परिचय 1983-84 में हुआ था। तब मैं प्रायमरी की छात्रा थी। बच्चों के किसी कार्यक्रम के लिए स्वर परीक्षण होना था। उस वक्त की बहुत धुंधली सी याद है। किसने हमारा ऑडिशन लिया, क्या पढ़ने दिया गया, यह सब तो कुछ याद नहीं, लेकिन मेरा चयन हुआ और जो पहली रिकार्डिंग हुई उसके लिए 25 रूपए का चेक मिला था, यह जरूर याद है। उसके बाद आकाशवाणी से जो नाता जुड़ा तो आज 35 बरस बाद भी वैसे ही कायम है। बस स्टेशन बदल गया है। रायपुर आकाशवाणी में बतौर बाल कलाकार जुड़ी, उसके बाद नाटक के लिए स्वर परीक्षण दिया और उसमें भी चयनित हुई। देशभक्ति और पारिवारिक नाटकों के साथ साइंस फिक्शन में भी किरदार निभाया। एक नाटक में मैं बाल भगत सिंह की भूमिका अदा कर रही थी। संवाद तो ठीक से पढ़ रही थी, लेकिन आवाज में जो भाव आना चाहिए, वह चेहरे पर आ रहा था। तब उस नाटक का निर्देशन कर रहे किशन गंगेले ने समझाया कि बेटा, तुम्हारा चेहरा कोई नहीं देख रहा, श्रोता तुम्हारी आवाज से ही तुम्हारे चेहरे पर उभरते भावों को समझेंगे, इसलिए भाव आवाज में पैदा करो, चेहरे पर नहीं। रेडियो पर आवाज के महत्व का यह पाठ कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसी नाटक में मेरे साथी बाल कलाकार को रोना था, लेकिन वह आवाज में रूलाई नहीं ला पा रहा था। इस सीन को हम रिकार्ड करने ही वाले थे कि गंगेले जी ने उस बच्चे को जोर से डांटा, एकदम से सबसे सामने डांट खाकर वह रूँआसा हो गया, तब उससे कहा गया कि अपने संवाद बोले। उसने लगभग रोते हुए अपने संवाद बोले और सीन एकदम बढ़िया रिकार्ड हुआ। उस दौर की एक मजेदार सी याद है। उस वक्त आकाशवाणी, रायपुर में कैन्टीन भी चला करता था, जिसमें अकेले कभी नहीं गई थी। लेकिन एक बार रिकार्डिंग के बाद सोचा कि आज कैन्टीन जाकर देखा जाए। पांच रूपए पास में थे, तो हिम्मत और बढ़ी। कैन्टीन वाले से एक वड़ा लिया, बिल बना पचास पैसे, लेकिन कैन्टीन वाले के पास खुले पैसे नहीं थे। मैं पांचवी कक्षा में ही थी, तो थोड़ा घबरा भी गई कि अब क्या करूं। तभी वहां मिर्जा मसूद आए, जो आकाशवाणी में कार्यरत थे और छत्तीसगढ़ की जानी-मानी रंगमंच हस्ती भी थे। उन्होंने मुझे देखा तो पूछा कि क्या हुआ, मैंने उन्हें अपनी दिक्कत बताई और उन्होंने मुस्कुराते हुए पचास पैसे कैन्टीन वाले को दे दिए। मैंने कहा - मैं पापा से बोलकर आपको पचास पैसे वापस कर दूंगी। वे हंस पड़े। जाहिर है मिर्जा साहब को वो पचास पैसे याद नहीं होंगे, लेकिन मुझे अब भी उनकी हंसी और पचास पैसे याद आते हैं।

बाल कलाकार का रोल पीछे छूटा तो आकाशवाणी में विभिन्न परिचर्चाओं में

एक नाटक में मैं बाल भगत सिंह की भूमिका अदा कर रही थी। संवाद तो ठीक से पढ़ रही थी, लेकिन आवाज में जो भाव आना चाहिए, वह चेहरे पर आ रहा था। तब उस नाटक का निर्देशन कर रहे किशन गंगेले ने समझाया कि बेटा, तुम्हारा चेहरा कोई नहीं देख रहा, श्रोता तुम्हारी आवाज से ही तुम्हारे चेहरे पर उभरते भावों को समझेंगे, इसलिए भाव आवाज में पैदा करो, चेहरे पर नहीं। रेडियो पर आवाज के महत्व का यह पाठ कभी भुलाया नहीं जा सकता।